



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

terapanthtimes.org



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-01-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

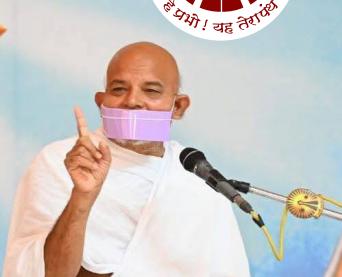
नई दिल्ली

• वर्ष 27 • अंक 14 • 05 जनवरी - 11 जनवरी 2026



युक्ति संगत बात को स्वीकार करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



बुद्धि और बाहुश्रूत्य के साथ प्रतिपादन की कला का है महत्व : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address
Here

पेला रों लगायों तो पाप न लागें, आपरो लगायों पापज लागें। दूसरों के लगाने से पाप नहीं लगता। अपना लगाया हुआ ही पाप लगता है।

— आचार्यश्री भिक्षु

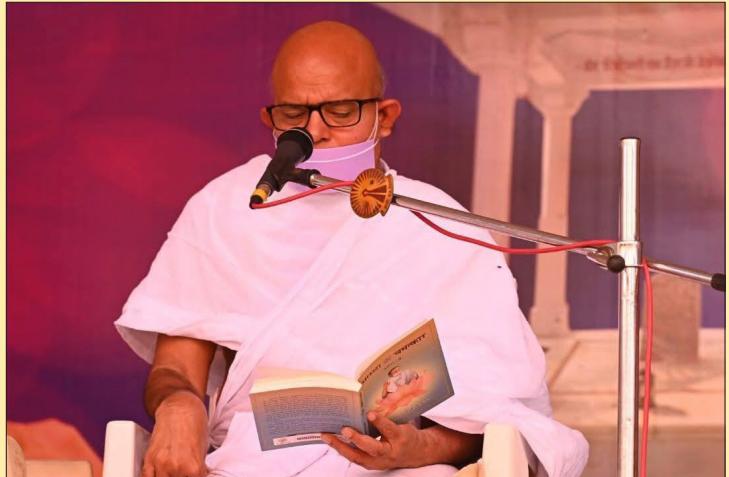
लोभ के उभरने पर मनुष्य हो सकता है पाप में प्रवृत्त : आचार्यश्री महाश्रमण

बगड़ी।

29 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखण्ड परिनायक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ सोजत रोड से विहार कर बगड़ी नगर के तेरापंथ भवन में पधारे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने कहा कि शास्त्रों में कहा गया है कि जैसे-जैसे लोभ होता है, वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। कुछ प्राप्त हो जाने पर मनुष्य सोचता है कि कुछ और मिले, आगे और मिले। लोभ ऐसी वृत्ति है, जिसके उभरने पर मनुष्य अनेक पापों में प्रवृत्त हो सकता है। वृत्ति होने पर ही प्रवृत्ति होती है। मनुष्य



हिंसा करता है, तो उसका कारण भीतर वृत्ति का होना है। प्रवृत्ति होने पर फिर उसका परिणाम भी आता है। इस प्रकार वृत्ति, प्रवृत्ति और परिणाम—ये तीनों बातें होती हैं। मूल में वृत्ति होती है, वृत्ति के उभार से होने वाला उपक्रम प्रवृत्ति है और

प्रवृत्ति से कोई परिणाम उत्पन्न होता है। परिणाम की पृष्ठभूमि में प्रवृत्ति और प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में वृत्ति होती है।

तत्त्वात्मक भाषा में यदि कोई व्यक्ति हिंसा करता है, तो उसकी पृष्ठभूमि में प्राणातिपात पापस्थान का उदय अथवा

राग-द्वेष की वृत्ति होती है, जिसके कारण वह हिंसा में प्रवृत्त होता है। हिंसा करना प्रवृत्ति है और हिंसा करने के कारण जो पापकर्म का बंध होता है, वह उसका परिणाम है। इसी प्रकार लोभ की वृत्ति भी एक वृत्ति है, जिसके कारण मनुष्य धोखाधड़ी करता है और द्वृष्ट बोलता है—यह प्रवृत्ति है, और फिर पकड़े जाने पर जो दंड भोगना पड़ता है, वह उसका परिणाम होता है।

आज हम बगड़ी नगर में आए हैं। यहाँ आचार्य श्री तुलसी का मर्यादा महोत्सव हुआ है। यह नगर संत भीखण जी से भी जुड़ा हुआ है, जहाँ से उनके अभिनिष्क्रमण का प्रसंग जुड़ा है। बगड़ी के साथ परम पूज्य आचार्य श्री भिक्षु के संसारपक्षीय जीवन के विवाह का प्रसंग तथा प्रथम दीक्षा ग्रहण करने का प्रसंग भी जुड़ा हुआ है। संघ की दृष्टि से देखें

तो अभिनिष्क्रमण का प्रसंग भी बगड़ी से संबंधित है। आचार्य प्रवर ने इस संदर्भ में “प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर” गीत का आंशिक संगान भी किया।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त साधीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को उद्घोषण देते हुए कहा कि एक आत्मद्रष्टा, आत्मकेंद्रित आराधक महापुरुष, जिन्होंने बगड़ी से अभिनिष्क्रमण किया था और अपना प्रवास ऐसे स्थान को बनाया जहाँ लोग जीवन की अंतिम यात्रा पूर्ण करते हैं। आचार्य भिक्षु साहस और निर्भीकता के साथ अपने आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर हुए। आचार्य भिक्षु ज्ञान-संपन्न थे, उनका व्यक्तित्व आचार-संपन्न और प्रज्ञा-संपन्न था, और इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने एक नए मार्ग का निर्माण किया।

(शेष पेज 9 पर)

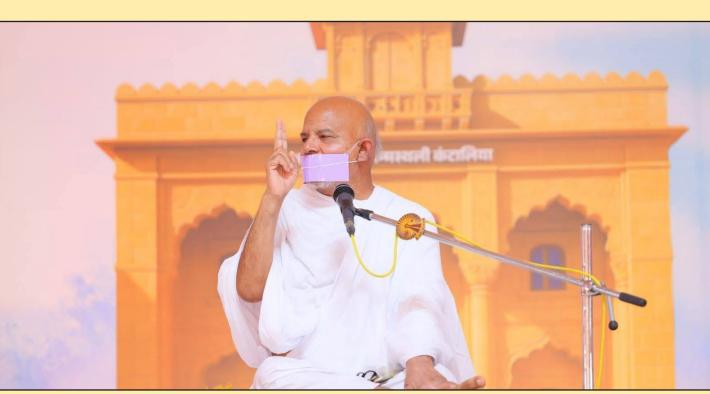
संतोष और असंतोष का हो विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

मुसालिया।

28 दिसंबर, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष ‘भिक्षु चेतना वर्ष’ के तेरह दिवसीय महाचरण का आयोजन महामना भिक्षु की जन्मस्थली कंटालिया में सुसंपन्न होने के उपरान्त रविवार को प्रातः: जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ लगभग सात किमी का विहार कर मुसालिया ग्राम स्थित ओसवाल पंचायत भवन में पधारे। ओसवाल

पंचायत भवन में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित श्रद्धालुओं को आहंत् वाङ्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि मनुष्य के भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। मनुष्य के भीतर क्रोध, अहंकार, माया, लोभ आदि के रूप में वृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं। जैन वाङ्मय में दस प्रकार की संज्ञाएँ बताई गई हैं। कई मनुष्य वीतराग अर्थात् अक्रोध, अमान, अमाया, अलोभ बन जाते हैं। सामान्य मनुष्य में क्रोध, अहंकार, माया और लोभ की वृत्ति उदय अथवा उत्तेजित रूप में कम या अधिक हो सकती है, परंतु



इन वृत्तियों की सत्ता बनी ही रहती है।

लोभ को पाप का बाप कहा गया है। बहुत से पापों का कारण लोभ ही होता है। मनुष्य के मन में लालसा और कामना

कामना का शल्य होता है। यदि व्यक्ति की कामना पूर्ण नहीं होती, तो उसके भीतर चुभन बनी रहती है और वह दुःखी हो जाता है। यह कामनाओं का संसार है, इसलिए मनुष्य को अपनी कामनाओं को संतुलित रखना चाहिए। संतोष को धारण करना चाहिए। संतोषी व्यक्ति सदा सुखी रहता है।

पंडित और ज्ञानी व्यक्ति अपने जीवन में संतोष को धारण कर लेता है। संतोष को परम सुख कहा गया है। संतोष और असंतोष कहाँ रखना चाहिए, इसका भी विवेक होना आवश्यक है।

(शेष पेज 9 पर)

महाचरण का बारहवां दिवस : आचार्य भिक्षु की वचन संपदा

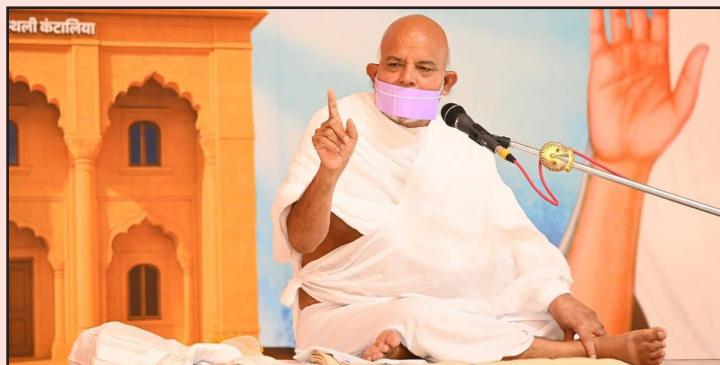
औचित्य अनुसार हो वचन शक्ति का प्रयोग : आचार्य श्री महाश्रमण

कंटालिया।

26 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सन्निधि में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष 'भिक्षु चेतना वर्ष' के महाचरण के बारहवें दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। समणीवृद्ध ने गीत का संगान किया। आज के निर्धारित विषय "आचार्य भिक्षु की वचन संपदा" पर साध्वी चारित्रियशा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने समुपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि धर्म अहिंसा है, संयम है और तप है। इस धर्म की जानकारी लोगों तक पहुँचाने का एक व्यावहारिक और सक्षम माध्यम वचन है। वचन के द्वारा हम दूसरों को ज्ञान प्रदान करने का प्रयास कर सकते हैं। तीर्थकर भगवान जनता को प्रतिबोध देने के लिए अपनी वाणी, अपने प्रवचन का प्रयोग



करते हैं, जिससे औरों को ज्ञान मिले और लोग संसार-सागर से तरने की दिशा में प्रयत्नशील हो सकें, साधु, साध्वी, श्रावक अथवा श्राविका बनकर अपना उद्धार कर सकें। वचन ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा विचारों का संप्रेषण हो सकता है।

वचन का उपयोग हम चार रूपों में कर सकते हैं। पहला प्रकार है—परिषद में व्याख्यान अथवा प्रवचन देना। दूसरा उपयोग है—बातचीत करना, कोई पूछे तो वार्तालाप के रूप में उसे बताना। तीसरा है—गीत का संगान करने के रूप में वचन का उपयोग। चौथा उपयोग है—मंगल पाठ आदि सुनाने के रूप में वचन का

उपयोग।

जिनके पास अच्छी वचन शक्ति है, उन्हें औचित्यानुसार अपनी वाणी की शक्ति का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी प्रवचन करते थे तो उनकी भाषा कितनी अच्छी और शुद्ध होती थी। उनके गीत संगान में भी माधुर्य था। हमारी बातचीत और वाणी से हमें किसी पर भी व्यक्तिगत आक्षेप लगाने से बचना चाहिए। अवगुणात्मक बातों से यथासंभव बचने का प्रयास करना चाहिए। वाणी से कटुतापूर्ण शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रवचन या भाषण देते समय ऐसी भाषा का प्रयोग

करना चाहिए, जिसे सुनने वाला समझ

सके। व्याख्यान ऐसा हो, जिसे सुनकर लोगों को अच्छा आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सके। प्रवचन आदि निर्धारित समय पर प्रारंभ कर उन्हें समय सीमा में ही परिसंपन्न करने का प्रयास करना चाहिए। प्रवचन में नियमितता और समय की पाबंदी हो, तो यह अच्छी बात होती है।

आचार्य भिक्षु की वाणी को हमने साक्षात् नहीं सुना, परंतु उनके दृष्टिंत आदि जो साहित्य में देखने को मिलते हैं और उनके जीवन के जो प्रसंग प्राप्त होते हैं, उनसे यह जाना जा सकता है कि उनके वचन में यदि विनोद भी था, तो उसके साथ तत्त्विक गहराई भी थी। उनके पास जो भी आता, वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था।

आचार्य भिक्षु की वचन संपदा ऐसी थी कि वे जो भी कहते, लोग उसे सम्मान और श्रद्धा से स्वीकार करते थे। किसी घटना-प्रसंग को वे सरलता से समझा देते थे। हमें भी स्वयं की वचन संपदा पर ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए। हम सभी की वचन संपदा अच्छी रहे, यह

काम्य है।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत मुनि पारस कुमार जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुनीता सोलंकी ने प्राकृत भाषा में अपनी अभिव्यक्ति दी। राज परिवार की ओर से हिमाद्री कुमारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। बालिका आरोही और सारा सेठिया ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी। मंजू डागा ने अपने परिवार की महिलाओं के साथ गीत का संगान किया। राजश्री डागा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला, कंटालिया के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी तथा प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को आचार्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष रमेश डागा, गौतम डागा, सपना श्रीमाल, अमृत डागा, जबर सिंह ने अपनी अभिव्यक्ति दी। महेन्द्र सिंघी एवं मदनलाल मरलेचा ने पृथक्-पृथक् गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

महाचरण का तेरहवाँ दिवस : आचार्य भिक्षु की तर्क संपदा

युक्तिसंगत बात को स्वीकार करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

27 दिसंबर, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष 'भिक्षु चेतना वर्ष' के महाचरण का तेरहवाँ एवं अंतिम दिवस। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में आज के कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने अन्य साध्वियों के साथ गीत की प्रस्तुति दी, जो भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु की समानताओं को निरूपित कर रहा था। आज के लिए निर्धारित विषय "आचार्य भिक्षु की तर्क संपदा" पर साध्वी ऋद्धिप्रभा जी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

महातपस्वी शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि धर्म का प्रज्ञापन यदि तार्किकता के साथ किया जाता है, तो



श्रमण केशी ने राजा प्रदेशी के तर्कों का खंडन किया और हेतुवाद के आधार पर अपनी बातों को प्रस्तुत किया। अंत में राजा प्रदेशी प्रणत हुए और उन्होंने कुमार श्रमण केशी की बातों को स्वीकार किया। हेतु के माध्यम से बात को समझाने का प्रयास हो, तो किसी को अपनी बात समझाने में आसानी हो सकती है। तर्क के साथ व्यक्ति की निष्ठा भी होनी चाहिए। कोई बात यदि युक्तिसंगत लगे, तो उसे स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। यथार्थ के साथ रहने का प्रयास करना

चाहिए। यदि कोई बात सही लगे, तो उसका खंडन करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जैन धर्म में अनेकांत है, इसका यह अर्थ नहीं है कि जो कोई भी जो बात कह रहा है, वह भी सत्य है। जो सत्य है, वह सत्य रहेगा और जो असत्य है, वह असत्य ही रहेगा।

आचार्य श्री भिक्षु की अपनी विशिष्ट तार्किकता थी। आज कंटालिया प्रवास का तेरहवाँ दिन है। इन्हें श्रावक-श्राविकाओं, साधु-साधिव्यों एवं समणियों की उपस्थिति रही। गायन और वक्तव्यों

का क्रम भी चला। आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत निर्धारित तेरह दिवसीय कार्यक्रम आज पूर्ण हुआ। यह महाचरण ज्ञानवर्धन का निमित्त भी बना। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने महाचरण की सम्पन्नता की घोषणा की।

कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने भी उद्घोषन दिया और आचार्यश्री से साधु-साधिव्यों को बख्खीश प्रदान करने की प्रार्थना की। इस पर आचार्य श्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि वे तो बोलने को भी तप मानते हैं और इस प्रकार यह तपस्या का ही एक क्रम रहा है। श्रावक-श्राविकाओं ने भी इतना सुनने का प्रयास किया। यह महामना भिक्षु स्वामी से जुड़ा हुआ स्थान है। हम सभी निरंतर अच्छी विकास करते रहें।

साध्वी अणिमाश्री जी एवं समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज, कंटालिया ने सामूहिक रूप से गीत की प्रस्तुति दी।

(शेष पेज 8 पर)



सप्त दिवसीय कॉफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सीपीएस एकेडमी फॉर लीडरशिप एण्ड एक्सीलेंस के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - प्रथम श्री अनंत बागरेचा की अध्यक्षता में आयोजन

हुआ। यह सप्त दिवसीय कार्यशाला का तुलसी वाटिका में किया गया।

इस कार्यशाला के दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि कन्हैयालाल कोठारी (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि नवीन बेंगानी (अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक), सीपीएस के राष्ट्रीय रांका, CPS जोनल प्रशिक्षक त्रुप्ति कोठारी, सीपीएस के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अखिल मारु, शाखा प्रभारी सुमित कोठारी, तेयुप अध्यक्ष राजीव कुमार बोथरा, मंत्री पूर्वांचल प्रबंध मंडल, परिषद् से सीपीएस प्रभारी मनोज श्यामसुखा (संगठन मंत्री) एवं श्री नैतिक सिद्धार्थ दुधेड़िया, स्थानीय संघीय संस्थाओं के

गणमान्य व्यक्ति, अभातेयुप सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। इस कार्यशाला के प्रायोजक कन्हैयालाल कोठारी, मनोज सेठिया एवं जयसिंह डागा थे। इस कार्यशाला को सफलतापूर्वक करवाने हेतु CPS जोनल प्रशिक्षक आयुषी रांका, CPS जोनल प्रशिक्षक त्रुप्ति कोठारी, सीपीएस के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अखिल मारु, तेयुप पूर्वांचल प्रबंध मंडल, परिषद् से सीपीएस प्रभारी मनोज श्यामसुखा (संगठन मंत्री) एवं श्री नैतिक

भादानी (सहमंत्री द्वितीय) एवं परिषद् के सीपीएस संयोजक संदीप सेठिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सीपीएस कार्यशाला के दीक्षांत समारोह में कुल 40 सम्भागी ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता की प्रबंध मंडल, परिषद् की कार्यकारिणी समिति, तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तरकोलकाता के सम्भागी सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

तप अनुमोदना पर भक्ति संध्या का आयोजन

दुर्बाई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्याएँ डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तथा अजमान सभा के तत्त्वावधान में, तपस्विनी नवनीता राकेश पटावरी एवं वर्षीतप तपस्वी दिनेश कोठारी की अनुमोदना के इस शुभ अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से गायक-गायिकाएँ जुड़ीं। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद भंसाली ने किया।

बबीता गुनेचा, अनिल गोखरु, अमित कांकरिया, मीनाक्षी भूतेड़िया और प्रकाश डाकलिया, भंवर डाकलिया ने अपनी आत्मीय स्वर लहरियों से तपस्वियों को अनुमोदना अर्पित की। तपस्विनी नवनीता राकेश पटावरी और वर्षीतप तपस्वी दिनेश कोठारी की अनुमोदना के इस शुभ अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से गायक-गायिकाएँ जुड़ीं। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद भंसाली ने किया।

इस दिवस की संध्या में डॉ. समणी मंजु प्रज्ञा, कमल छाजेड़, गणपत भंसाली, महेंद्र सिंधी, सुरेंद्र बोरड पटावरी, कमल सेठिया, ममता धीरज जैन, प्रीति डाकलिया, संजय भाणावत, अरुण बैद, हेमलता पीपाड़ा, कन्हैयालाल पटावरी, ऋषि दुग्ध और निलेश बाफना जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों ने अपनी सुरीली प्रस्तुतियों से सभी को भक्ति में लीन कर दिया।

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला शिविर का समापन

गंगाशहर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में संचालित ज्ञानशाला का त्रिदिवसीय ज्ञानशाला शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन गंगाशहर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के पावन सान्निध्य में किया गया। आज शिविर के समापन सत्र में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई द्वारा संघ में चलने वाले अनेकों आयाम में से एक आयाम है- ज्ञानशाला। यह गुरुदेव तुलसी का अनुपम अवदान है। प्रशिक्षण के साथ-साथ ज्ञानार्थियों से कंठस्थ ज्ञान सुनने, कठिन शब्द लिखवाने से सीखे गए ज्ञान की शुद्धता बढ़ती है। ज्ञानार्थियों को 25 बोल, अर्हत वंदना आदि अलग-अलग समूह बनाकर कंठस्थ करवाने की प्रेरणा दी। ज्ञानशाला के थली अंचल के सहसंयोजक रत्नलाल छलाणी ने बताया कि ज्ञानशाला में तेरापंथी सभा आयोजक संस्था तथा तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ युवक परिषद् सहयोगी संस्था के रूप में सक्रिय रहती है।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का हुआ सुंदर आयोजन

दक्षिण मुंबई।

आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मुंबई के तत्वावधान में तेरापंथ - मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन कमल कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई द्वारा किया गया।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी शिवमाला जी एवं सहवती साध्वीवृद्ध के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन मुंबई सभा के अध्यक्ष मानकर्थींग ने किया।

मुंबई सभा मंत्री दिनेश सुतरिया, महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ ने आगंतुकों का स्वागत अभिनंदन किया। दक्षिण मुंबई सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों एवं श्रावकों का दक्षिण मुंबई समाज की धाकड़ ने किया।

ओर स स्वागत किया। साध्वीश्री ने भी आचार्य महाप्रज्ञ रचित तेरापंथ मेरापंथ बना लो जी का सुमधुर संगान किया। तत्पश्चात सूरत से पथारे हुए मुख्य वक्ता प्रवक्ता उपासक सुरेश बाफना का परिचय एवं सम्मान मोमेंटो द्वारा सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

सुरेश बाफना ने तेरापंथ के उद्धव से लेकर साध्य और साधन की मीमांसा आदि विषयों का तलस्सर्णी ज्ञान श्रावकों के सामने प्रस्तुत किया। आचार्य भिक्षु की धर्म अधर्म की कसौटी, व्यावहारिक कर्तव्य - आध्यात्मिक धर्म की विवेचना की।

उपस्थित श्रावकों की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान भी सुंदर तरीके एवं दृष्टांतों से किया। साध्वी शिवमाला जी ने अपने कुछ विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

संस्कार निर्माण शिविर का हुआ आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में तुलसी चेतना सेवा केंद्र में बच्चों का पांच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर चल रहा है।

तेरापंथ महासभा के तत्वावधान में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गांधीनगर बैंगलुरु द्वारा आयोजित शिविर के तीसरे दिन डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा संयमित रहते हुए ही धरती को बचाया जा सकता है। बच्चों

को अनावश्यक अपव्यय से बचना सिखाएं। वर्तमान में चारों तरफ बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण ने बड़े-बड़े राष्ट्रों को भी चिंता में डाल दिया है। इसके लिए सशक्त उपाय है बाल अवस्था से ही बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करें।

मुनिजी ने कहा इसके लिए डिस्पोजेबल चीजों का उपयोग कम करें माता-पिता स्वयं भी बच्चों को युज एंड श्रो की संस्कृति ना सिखाएं उन्हें चीजों को युज एंड रीयूज करना सिखाएं। पर्यावरण को सुरक्षित रखना बहुत बड़ा

सामाजिक धर्म बताया गया है। जैन धर्म में प्राचीन समय से ही संयम और त्याग के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति सबको जागरूक किया जाता है।

मुनिश्री की प्रेरणा प्राप्त करके 150 शिविरार्थी बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। शिविर संयोजिका नीता गादिया ने बताया बच्चे शिविर में सुबह जल्दी उठकर योग प्राणायाम एवं गुरु दर्शन का संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने बच्चों को पांवर औफ मैनेजमेंट विषय पर प्रशिक्षण दिया। मोटिवेशनल स्पीकर का तेरापंथ सभा गांधीनगर की तरफ से सम्मान किया गया।

निःशुल्क थायराइड टेस्ट शिविर का आयोजन

जालना। रुबी हॉस्पिटल जालना तेरापंथ महिला मंडल की ओर से एवं जमुना बाई शिवरतन बगड़िया चैरिटेबल ट्रस्ट एवं रोटरी क्लब जालना रेनबो के सौजन्य से एवं प्रकल्प प्रमुख डॉ. राजेश सेठिया के सहयोग से थायराइड टेस्ट शिविर का आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अनिल संचेती ने पन्नालाल बगड़िया का शाल एवं साहित्य देकर स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन परेश धोका ने किया।

'शासनश्री' साध्वी विनयश्रीजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्घार

जीवन धन्य बणायो

● शासनश्री साध्वी बसन्तप्रभा आदि साध्वी वृन्द ●

जीवन धन्य बणायो।
शासनश्री विनयश्रीजी, तप इतिहास रचायो॥
नन्दनवन शासन पायो, तुलसी कर स्यूं दीक्षा।
पुगलिया कुल पर कलश चढ़ायो, पूर्ण करी परीक्षा,
जयपुर नगरी में संघ रो सुयश बढ़ायो॥ 1॥
साध्वी सोहनां जी सुवटां जी री सेवा खूब साझी।
साथ वाली सतिया रहती, हरदम थाँस्यू राजी,
धन्य-धन्य शासनश्री जी थे, जीवन मोल बढ़ायो॥ 2॥
नहीं मौत रो भय सतायो, नहीं जीै री आशा,
वीतरागता की मंजिल पर, बढ़णे री अभिलाषा।
गुरु महाश्रमण कृपा स्यूं संथारो थे थारयो॥ 3॥
साध्वी जगवत्सला जी, अतुलप्रभा जी सेवा करी सांतरी,
संयम में सहयोग देकर, माइतां री ठारी थे आंतरी।
अंतिम समय तक साझा देकर, अपनो फर्ज निभायो॥ 4॥
मंत्री मुनि समाधि स्थल पर, अंतिम मनोरथ धारयो,
चढ़ता परिणामं स्यूं लीन्हो, भार पार उतारयो।
देवां सौ-सौ बार बधाई, जीवन ने थे चमकायो।
अविनय आशातना हुई महास्यूं तो, माफ थे करिज्यो॥ 5॥

तर्ज़ : संयममय जीवन हो

गुण गरिमा गायें हम

● साध्वी कल्पमाला ●

महिमा निराली, शासनश्री तुल्हारी, गुण गरिमा गायें हम-2
तुम हो भाग्यशाली, अनशन चमत्कारी, गुण गाथा गायें हम-2
गिरिगढ़ की पावन भूमि में, जन्म लिया था तुमने,
गुरु तुलसी कर कमलों से दीक्षा लेकर भैक्षव शासन में।
पाईं तुमसे शिक्षा अद्भुत निराली॥ 1॥
साध्वी सोहनांजी के संग रहकर, जीवन निर्माण किया तुमने,
अच्छे-अच्छे संस्कारों से साकार किये उनके सपने।
अनगिनत उपकार तेरे, बोलो कैसे बताये॥ 2॥
छोटी छोटी सतियों का, जीवन धन्य बनाया,
सहनशीलता, सरलता का पाठ तुमने पढ़ाया।
आशीष आपका, कल्याणकारी॥ 3॥
आंकी जीवन की कीमत, हृद हिम्मत दिखलाई
चढ़ते भावों की श्रेणी से, लक्षित मंजिल पाई।
गुरु महाश्रमण शासन में, बनी शिव पथ की अनुरागी॥ 4॥

तर्ज़ : राधा बिना है

सुखे-सुखे भवपार हो

● मुनि कमल कुमार, मुनि श्रेयांस कुमार ●

तुलसी गुरु मुख कमल से, दीक्षा की स्वीकार
महाप्रज्ञ-महाश्रमण की करुणा अपरम्पार।
अर्जुनलाल जी की सुता, विनयश्री जी नाम।
श्रीदुंगरगढ़ वासिनी, किया है अच्छा काम।
सजग अवस्था में किया, संथारा स्वीकार।
सुखे-सुखे भवपार हो, अन्तर मन उद्गार।
जगवत्सला, अतुलप्रभा, सहयोगी हर याम।
चढ़ते-बढ़ते ही रहे, अब सतिवर परिणाम।
करते मंगल कामना, शीघ्र वरें भव थाह।
संत कमल श्रेयांस की, यही एक है चाह॥

तेरा अनशन है चन्दन

● साध्वी लक्ष्यप्रभा ●

पायी चादर उजली-उजली, जतन बड़ा पुरजोर।
सतीवर है वन्दन, तेरा अनशन है चन्दन।
तेरा अनशन है चन्दन, विनयश्रीजी को वन्दन॥

भैक्षव शासन पाया, पायी गुरु छाया।
तुलसी का साया मंगल, तेरे मन को भाया।
पाया रतन अमोला संयम, जीवन में उपहार॥
लम्बी है संयम यात्रा, तुमको हम बधाएं।
साँसों की सरगम तेरी, ॐ भिक्षु गाएं।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, अनुभव का इजहार॥

गुरु भक्ति शक्ति का नजारा निराला।

रोम-रोम श्रद्धा से तेरा मतवाला।

चढ़े भावना शिखरों-शिखरों चमक रहा दीदार।

जय हो! जय हो! ज्येति चरण की, जय महाश्रमण दरबार॥

तर्ज़ : स्वर्ग से सुन्दर

तेरा अनशन है चन्दन

● साध्वी कनकश्री 'राजगढ़' ●

एवं सहवर्ती साध्वी वृन्द

साध्वी विनयश्रीजी (श्रीदुंगरगढ़) ने साधु के तीसरे मनोरथ की आराधना कर संयम जीवन को सफल सुफल किया है। साध्वी विनयश्री जी मेरे बचपन की साथी रही हैं। पा.शि.सं. में हम दोनों की काफी एकरूपता थी।

बचपन से ये सहज सरल मृदुभाषी व्यवहार कुशल रहे हैं। साध्वी सोहनां जी लाडनूं के साथ उनके तन की पछेवड़ी बन कर रहे। प्रवचन कौशल अच्छा था। अग्रगामी बनकर भी संघ की अच्छा प्रभावना की।

साध्वी जगवत्सलाजी, साध्वी अतुलप्रभाजी साध्वीश्री की सेवा में संलग्न थी। खूब चित्त समाधि पहुंचाई। साध्वी मधुस्मिता जी का भी शुभ संयोग मिल गया। आध्यात्मिक उर्ध्वारोहण यात्रा की मंगल कामना।

सीपीएस जूनियर कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

विजयनगर

अभातेयुप के तत्वावधान में सीपीएस अकादमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेस के अंतर्गत सीपीएस जूनियर कार्यशाला का दीक्षांत समारोह तेरापंथ भवन विजयनगर में तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया की अध्यक्षता में हुआ संपन्न। पिछले 6 दिनों से चल रही इस कार्यशाला में प्रशिक्षिका के रूप में

संगीता गन्ना एवं प्रीती धाकड़ ने 27 प्रतिभागी बच्चों का हौसला बढ़ाया। दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत, सीपीएस राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत विशिष्ट अतिथि राजेश चावत, सुरेश मांडोत, तेयुप विजयनगर शाखा प्रभारी आलोक छाजेड़ ने आपने प्रेरणादायक व्यक्तव्य द्वारा बच्चों का मनोबल बढ़ाया एवं बच्चों के उज्ज्वल भविष्य हेतु इस आयाम की प्रशंसा की। अंत



तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का हुआ आयोजन

साउथ कोलकाता।

युगप्रधान अचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिश्री जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के निर्देशन में तेरापंथ : मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा साउथ कलकत्ता, टालीगंज, बेहाला द्वारा संयुक्त रूप से तेरापंथ भवन में किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि इनकम टैक्स अपीलेट दिव्यनुल जज मनीष बोरड व मुख्य वक्ता जैन स्कॉलर, उपासक सुधांशु जी चण्डालिया थे। कार्यशाला में उद्बोधन में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुनिश्री जिनेशकुमार जी ने कहा दुनिया में शक्ति का बहुत बड़ा महत्व है। शक्ति को बिना भक्ति भी नहीं होती है। दुनिया में अनेक शक्तियां हैं। उसमें सर्वश्रेष्ठ शक्ति अध्यात्म की है। अध्यात्म की शक्ति

जिसके पास होती है वह स्वयं तो तरता ही है दूसरों को भी तारता है। आचार्य भिक्षु अध्यात्म की शक्ति से संपन्न थे। उन्होंने अध्यात्म के द्वारा स्वयं को प्रकाशित किया दूसरों को भी प्रकाशित करने में निमित्त बने।

आचार्य भिक्षु तेरापंथ के संस्थापक थे। उनकी वीर वचनों व आगमों में गहरी आस्था थी। वे आगमों की आधार मानकर ही बात करते थे। मुनि ने आगे कहा आचार्य भिक्षु ने स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्य रघुनाथ जी के पास दीक्षा ली।

वैचारिक मतभेद के कारण वे उनसे पृथक तेरापंथ हुए। उनकी धर्म क्रांति फलश्रुति है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मनीष बोरड ने अपने विचार व्यक्त किये। उपासक सुधांशु अध्यक्ष नरेन्द्र सिरोहिया ने अपने विचार व्यक्त किये।

षष्ठि पूर्ति अभ्यर्थना समारोह का आयोजन

दिव्ये।

जन्मभूमि में जैन संत मुनि संजय कुमार जी की दीक्षा के 60 वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर तेरापंथ सभा भवन में षष्ठी पूर्ति अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साधु-संतों, श्रावक-श्राविकाओं एवं समाजजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। महोत्सव को संबोधित करते हुए मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि “मैं स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि संयम एवं दीक्षा के पथ पर चलकर जीवन को सार्थक बना सका।

संसार के कोलाहल से दूर रहकर आत्मरमण, जिनवाणी और साधना के माध्यम से परम शांति की अनुभूति होती है। यह अवसर पूर्व जन्मों की तपस्या का ही फल है।” उन्होंने कहा कि संत जीवन की आधारशिला माता द्वारा दिए गए संस्कार होते हैं, जो संतान भी अपने विचार व्यक्त किए।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्तोत्रगमिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन गृह प्रवेश



■ उदयपुर। सुंदरवास निवासी चंद्रसिंह निर्मला नाहर का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण व जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया गया।

आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में पर श्रद्धा प्रणति

वो देवपुरुष मनहार

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

सत्यता के सैनिक वो देवपुरुष मनहार। साधना में अनुपम क्षमता निर्मल ज्ञान अपार।।

1. शुद्ध चेतना के धारक लब्धिधर पावन, मर्यादा के प्रहरी विलक्षण मनभावन।

शुक्ल ध्यान योगीश्वर, शक्ति शांति अनपार।।

2. अटल आस्था आगम पर ध्येय बनाया, मृदृ वचनों से सबको शिखर चढ़ाया।

घोर विरोधों में भी, शीतल सम रम्याकार।।

3. रआणाए मामगं धम्मंर सूत्र अपनाया, स्वर्ण सम जीवन को खूब तपाया।

श्रम निष्ठा के रण में, अप्रमाद की बहार।।

4. एक गुरु का शासन वृक्ष लहलहाया, ममकार का विसर्जन बोध दिराया।

अर्हम के पुजारी, हर कार्य किया साकार।।

5. मंगल कल्याणमय का ध्यान जग लगाएं, चरण युगल में हम शीष द्वुकाएं।

सांवरिये का सुमिरण करता भवसागर पार।।

लय - सावन का महीना

श्री भीखण की गौरव गाथा

● साध्वी विनम्रयशा ●

1. एक चमत्कारी बाबा कंटालिया की धरा पर आए। तेरापंथ का कल्पवृक्ष जिसकी छाँव में हम सरसाएँ।।

2. मां दीपा के राज दुलारे बल्लूशाह के कुल उजियारे। सिंह स्वप्नधारी सिंहपुरुष असहायों के जो सहारे।।

3. अनगिन कष्ट सह फिर भी आर्य भिक्षु नहीं घबराएं। छाती में मुक्का सिर होला समता दीप प्रभु कहलाए।।

4. कष्टों की कजरारी रातें ज्ञान ध्यान में सदा बिताएँ। गाली देने वालों पर प्रभु करुणा अमृत रस बरसाए।।

5. रात-2 भर जागे स्वामी श्रावकों को सत्य बताएँ। उस भीखण की गौरव गाथा जितनी गाएं कम रह जाए।।

6. केलवा अंधेरी ओरी श्री भिक्षु का गौरव गाए। सिरियारी सुखकारी धाम जन मानस के मन को भाएं।।

7. धम्मगिरि पे ध्यान लगाने तपस्विनी सरिता सुहाए। वज्र छाती वाले बाबा तेरापंथ का ध्वज फहराएं।।

8. शोभजी को आर्यचरण दान दया का पाठ पढ़ाएं। पटवोजी गेरूलालजी श्रद्धानत सुयश बढ़ाएं।।

9. कालकूट पीकर के स्वामी कालजयी कर्तृत्व कहाए। यश सौरभ चारों कूटों में महाश्रमण गुरुवर महकाए।।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का समापन

कुंभलगढ़ी।

प्रेक्षाध्यान प्रयोग से ठीक किया जा सकता है।

प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत कायोत्सर्ग

का प्रयोग भेद विज्ञान अर्थात आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है का बोध करवाता है, मन की चंचलता मिटाने वाला एवं

कैसर जैसी अनेक असाध्य बीमारियों का सटीक समाधान बनकर उभर रहा है। मेडिकल साइंस में इस पर काफी

रिसर्च हो रहे हैं।

नचिकेता आदित्य मुनि ने पावर आॉफ ध्यान विषय पर विचार व्यक्त किए। 2 दिन चले विभिन्न ध्यान के

सत्रों में डालमकुमार सेठिया* के

निर्देशन में प्रोजेक्टर के माध्यम से

कयोत्सर्ग, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा,

समतल स्वाश प्रेक्षा, मंत्र प्रेक्षाआदि

अनेक विषयों पर प्रेक्षा प्रशिक्षिका

*श्रीमती रेणु कोठारी नकि उपस्थिति रही। लगभग 100 साधकों की

उपस्थिति रही और उन्होंने अपने अनुभव भी बताएं। जय कोठारी एवं

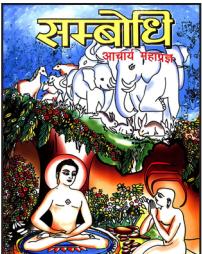
नमन पुगलिया तथा यशिका जैन ने गीत प्रस्तुत किया।

सभा अध्यक्ष पावर समल भंसाली ने सभी शिविरार्थीयों के प्रति आध्यात्मिक

मंगलकामनाएं एवं सभा मंत्री विनोद

छाजेड़ ने आभार प्रकट किया।

संबोधि



परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

उपवास शब्द की ध्वनि भी यही है कि चेतना के निकट निवास करना। चेतना वहीं आकृष्ट हो जाती है जहां दर्द, पीड़ा या कष्ट है। सिर में दर्द है तो ध्यान सिर पर चला जाता है। पैर में कांटा लगा तो ध्यान उस जगह आ जाता है। यह सबका स्पष्ट अनुभव है। भूख भी पीड़ा है। बुभुक्षित व्यक्ति का ध्यान पेट के आस-पास धूमने लगता है। उसे स्वप्न में भी भोजन का दर्शन होता है।

एक व्यक्ति अपने परिवार के साथ गांव आ रहा था, मार्ग में निर्जला एकादशी का महान् पर्व आ गया। मन्दिर में कथा सुनने लगा। पंडितजी ने कहा-आज के व्रत का महापुण्य होता है। यह सुन उसने व्रत रख लिया और अपने साथ वाले कुत्ते और बिल्ली को भी व्रत करा दिया। रात को सोये। सब उठे। बिल्ली ने कुत्ते से कहा-‘रात को बड़ा अद्भुत स्वप्न आया।’ पूछा-‘क्या?’ बिल्ली ने कहा-‘आकाश बादलों से छाया हुआ था और चूहों की बरसात हो रही थी।’ कुत्ते ने कहा-‘पगली ! ऐसा कभी होता है? स्वप्न तो मुझे भी आया था। मैंने हड्डियों की बरसात देखी।’ मालिक सब सुनकर हंस रहा था। उसने कहा-‘तुम दोनों ही नासमझ हो। न आकाश से चूहे बरसते हैं और न हड्डियां। स्वप्न मेरा सच था। मैंने देखा आकाश में भोजन की बरसात हो रही थी।

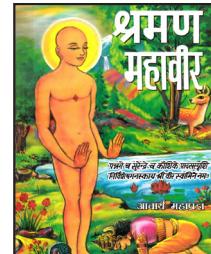
बरसात तो थी नहीं, भूखे व्यक्तियों का सपना था। चेतना वहीं मंडरा रही थी।

बुद्ध के जीवन का एक प्रसंग है। वे एक नगर में आये। एक निर्धन किसान की इच्छा हुई कि आज कुछ सुनना है। किन्तु सुबह-सुबह एक बैल घर से निकल गया। बेचारे को खोजने जाना पड़ा। दोपहर में बैल मिला। दिन भर का थका-मांदा भूखा-प्यासा था। उसके कुछ सुनने की तीव्र प्यास थी। घर नहीं आया। सीधा बुद्ध के समीप पहुंचा। दर्शन किये और कहा-‘कृपया, कुछ मुझे भी उपदेश दें।’ बुद्ध ने देखा-प्यासा है आदमी, भूखा भी है। बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा-इसे पहले भोजन दो।’ भोजन कराया और उपदेश दिया। वह निर्धन किसान श्रोतापति को उपलब्ध हो गया, धर्म के मार्ग-बुद्ध के मार्ग को प्राप्त हो गया। धर्म के स्रोत में गिर गया। बुद्ध जानते थे-भूख रोग है। अभी उपदेश सार्थक नहीं होगा। चेतना सुनती नहीं है। चेतना के सुनने का आयाम है-स्वस्थता।

महावीर ने अनशन का उपयोग किया और कहा-भोजन को छोड़कर चेतना को जागृत रखने का प्रयोग भी साधक को करना चाहिए और उनमें होने वाले अनुभवों से भी अपने को प्रशिक्षित करना चाहिए। साधक को यह देखते रहना चाहिए कि भूख कहां है? किसे है? मैं कौन हूं? शरीर के साथ जो तादात्म्य है उसे तोड़ते रहना चाहिए। मैं शरीर नहीं हूं, चेतन हूं। चेतना पेट के पास दौड़े तब उसे सावधान करे कि-‘आज भोजन करना ही नहीं है, तब कैसा चिंतन ? आत्म-जागरण में अपने का व्यस्त रखने का प्रयास करना तथा सूक्ष्म शरीर को प्रकाशित कर चेतना की सन्निधि में पहुंचना ही उपवास का कार्य है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर



क्रान्ति का सिंहनाद

वस्तु-परिमाण इच्छा-परिमाण का फलित है। वस्तु का अपरिमित संग्रह वही व्यक्ति करता है जिसकी इच्छा अपरिमित है। वस्तु के आधार पर परिग्रह की दो दिशाएं बनती हैं-

1. महा-परिग्रह- असीम व्यक्तिगत स्वामित्व।
2. अल्प-परिग्रह- सीमित व्यक्तिगत स्वामित्व।

भगवान् महावीर ने अल्प-परिग्रही समाज-रचना की नींव डाली। इसमें लाखों स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुए। उन्होंने अपनी आवश्यक सम्पत्ति से अधिक संग्रह नहीं करने का संकल्प किया। भगवान् ने संग्रह की गणितिक सीमा का प्रतिपादन नहीं किया। उन्होंने संग्रह-नियंत्रण की दो दिशाएं प्रस्तुत कीं। पहली अर्थार्जन में साधन-शुद्धि का विवेक और दूसरी-व्यक्तिगत जीवन में संयम का अभ्यास। अल्प-परिग्रही व्यक्तियों के लिए निम्न आचरण वर्जित थे-

1. मिलावट।
2. द्वृष्टा तोल-माप।
3. असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु देना।
4. पशुओं पर अधिक भार लादना।
5. दूसरों की जीविका का विच्छेद करना।

भगवान ने अनुभव किया कि बहुत सारे लोग सुदूरप्रदेशों में जाते हैं और वे उस प्रदेश की जनता के हितों का अपहरण करते हैं। इस प्रवृत्ति से आक्रमण और संग्रह-दोनों को प्रोत्साहन मिलता है। भगवान् ने इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए ‘दिग्ब्रत’ का प्रतिपादन किया। उनके अल्प-परिग्रही अनुयायियों ने अपने प्रदेश से बाहर जाकर अर्थार्जन करना त्याग दिया। अप्राप्त भोग और सुख को प्राप्त करने के लिए दूसरे प्रदेशों में जाना उनके लिए निषिद्ध आचरण हो गया।

भगवान ने जन-जन में अपरिग्रह की निष्ठा का निर्माण किया। ‘पूनिया’ इस निष्ठा का ज्वलन्त प्रतीक था। समाज-श्रेणिक ने उससे कहा-‘तुम एक सामायिक समता की साधना का व्रत मुझे दे दो। उसके बदले में मैं तुम्हें आधा राज्य दे दूंगा।’

‘पूनिया’ ने विनम्रता के साथ समाज का प्रस्ताव लौटा दिया। अपनी आत्मिक साधना का सौदा उसे मान्य नहीं हुआ।

‘पूनिया’ कोई धनपति नहीं था। वह रूई की पूनिया बनाकर अपनी जीविका चलाता था। पर वह समत्व का धनी था। परिग्रह के केन्द्रीकरण में उसका विश्वास नहीं था। वह भगवान् महावीर के अल्प-संग्रह के आदोलन का प्रमुख अनुयायी था।

भगवान महावीर का असंग्रह-आंदोलन उनके अहिंसा-आंदोलन का ही अंग था। उनका अनुभव था कि अहिंसा की प्रतिष्ठा हुए बिना असंग्रह की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। संग्रह में आसक्त मनुष्य वैर की अभिवृद्धि करता है। अहिंसा का स्वरूप अवैर है। वैर की वृद्धि करने वाला अहिंसा को विकसित नहीं कर सकता। जिसे मानवीय एकता की अनुभूति नहीं है, दूसरों के हितों के अपहरण में अपने हितों के अपहरण की अनुभूति नहीं है, वह असंग्रह का आचरण नहीं कर सकता। व्यवस्था की बाध्यता से व्यक्ति व्यक्तिगत स्वामित्व को छोड़ देता है। यह अद्भुत सामाजिक परिवर्तन विगत कुछ शताब्दियों में घटित हुआ सामाजिक परिवर्तन है। किन्तु सुदूर अतीत में व्यक्तिगत स्वामित्व के समीकरण की दिशा का उद्घाटन महावीर के असंग्रह आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटना है।

विरोधाभास का वातायन

जीवन में विरोधों की अनगिन चयनिकाएं हैं। कोई भी मनुष्य जीवन के प्रभात से जीवन की सन्ध्या तक एकरूप नहीं रहता। एकरूपता का आग्रह रखने वाले इस अनेकरूपता को विरोधाभास मानते हैं। भगवान् महावीर का जीवन इन विरोधाभासों से शून्य नहीं था। भगवान् परिषद् के बीच में बैठे थे। एक आजीवक उपासक आकर बोला-‘भंते ! आप पहले अकेले रहते थे और अब परिषद् के बीच में रहते हैं। क्या यह विरोधाभास नहीं है?’

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री कुन्नणांजी (बाजोली) दीक्षा क्रमांक 212

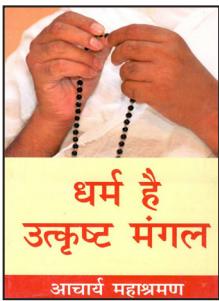
साध्वीश्री वैराग्यती और तपस्वीं साध्वी थी। आपने उपवास से लेकर 16 दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। आपकी तपस्या तथा प्रत्यारूप्यान का वर्णन इस प्रकार है- उपवास/1285, 2/192, 3/129, 4/96, 5/5, 6/1, 7/1, 8/10, 9/1, 10/2, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1.

41 वर्ष तक प्रतिवर्ष एक बार दस प्रत्यारूप्यान तप किया।
43 वर्ष तक 2 विग्रह से अधिक खाने का त्याग रखा।

- साभार : शासन समुद्र -



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



-आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री तुलसी : जयाचार्य
के परिप्रेक्ष्य में



जन्म और मृत्यु इस जगत् की सामान्य एवं शाश्वत घटनाएं हैं। ये अपने आप में न तो महत्वपूर्ण होती हैं और न ही लघुत्वपूर्ण। किन्तु इन दोनों के बीच जो अन्तराल होता है, जिसे जीवन कहते हैं, वह महान् या लघु होता है। इसकी महत्ता और लघुता जन्म व, और मृत्यु को भी प्रभावित करती है।

महान् वह होता है जो अपना भावात्मक दायरा विस्तृत कर लेता है और लघु वह होता जो उसे संकुचित कर लेता है। एक स्वार्थी व्यक्ति महान् नहीं होता, क्योंकि उसका चिंतन संकीर्ण होता है। उसकी सोच तुच्छ स्वार्थ-पूर्ति पर केन्द्रित रहता है।

भारतीय संस्कृति ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'तुर्मसि नाम सच्चेव जं हंतव्यं ति मन्सि' आदि सूत्रों के माध्यम से स्वार्थ-चेतना के उदात्तीकरण का पाठ सिखाया है। महानता की प्रमुख कसौटी है-परार्थ और परमार्थ की चेतना का जागरण।

महानता के महान् साधक युगप्रधान गुरुदेवश्री तुलसी बहु-आयामी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के धनी हैं। इनकी तुलना अनेक महापुरुषों के साथ की जा सकती है। गुरुदेवश्री के चिंतन, कार्य एवं जीवन-घटनाओं के कुछ ऐसे पहलु हैं जिनमें श्रीमज्जयाचार्य का प्रतिविम्ब देखा जा सकता है।

आगम-मंथन

प्रज्ञापुरुष जयाचार्य के मन में जैन आगमों को जनभोग्य बनाने की प्रेरणा जागी। उन्होंने उत्तराध्ययन की जोड़, आचारांग की जोड़, आचारांग रो टब्बो, ज्ञाता री जोड़, निशीथ री जोड़, अनुयोगद्वार री जोड़, पण्णवणा री जोड़ आदि आगम-व्याख्या ग्रंथ तथा 'झीणी चर्चा', 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध' आदि अनेकानेक तत्त्व-दर्शन संबंधी ग्रंथों का प्रणयन कर जैन आगमों को राजस्थानी भाषाविद् लोगों के लिए सुवोध बनाया।

गुरुदेवश्री तुलसी के मानस-पट पर भी एक ऐसा ही चित्र उभरा। वि. सं. २०१२ से गुरुदेवश्री के नेतृत्व में जैन आगमसम्पादन का कार्य चल रहा है, जिसके अन्तर्गत पाठान्तर व शब्दसूची सहित आगम-बत्तीसी का सम्पादन हो चुका है। दसवेआलियं, उत्तरज्ञयणाणि, सूयगडो, ठाण, अणुओगदाराइं, भगवई विआह पण्णती (प्रथम् खण्ड) एवं समवाओं का मूल पाठ, संस्कृत छाया व समीक्षापूर्ण व्याख्यात्मक टिप्पणी सहित हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। श्रमण प्रतिक्रमण भी इसी रूप में प्रकाशित है। दसवेआलियं एवं उत्तरज्ञयणाणि का हिन्दी पद्यानुवाद, हिन्दी गद्यानुवाद, आयारो का मूलपाठ एवं समीक्षा पूर्ण व्याख्यात्मक टिप्पणी सहित हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित है। 'दशवैकालिक: एक समीक्षात्मक अध्ययन' तथा 'उत्तराध्ययन: एक समीक्षात्मक अध्ययन' भी मुद्रित हैं। एकार्थक कोश, निरुक्त कोश, एवं देशी शब्दकोश तथा दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म प्रज्ञप्ति ख. १) एवं उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म प्रज्ञप्ति ख. २) भी इसी श्रृंखला की कड़ियां हैं। जयाचार्य द्वारा प्रणीत 'भगवती की जोड़' प्रायः पूर्णतया मूल पाठ सहित प्रकाशित है। इनके अतिरिक्त और भी कुछ आगम-साहित्य प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्था में नवीनीकरण

श्रीमज्जयाचार्य से पहले तेरापंथ में व्यवस्था का पक्ष सुदृढ़ नहीं था। उन्होंने साधु-संघ में कई नई व्यवस्थाएं लागू-कीं, जैसे-

पुस्तकों का संघीकरण

व्यक्तिगत शिष्य बनाने की परम्परा को तो आचार्य भिक्षु ने ही समाप्त कर दिया था, पर व्यक्तिगत पुस्तकें रखने की परम्परा जयाचार्य के समय तक चालू थी। किसी वर्ग में ढेर सारी पुस्तकें थीं तो किसी वर्ग में बहुत कम। जयाचार्य ने अपनी सूझ-बूझ से उस परंपरा को मिटाया और पुस्तकों का केन्द्रीकरण किया। उसके पश्चात् अपेक्षा के अनुसार सब साधु-साधिव्यों में उनका वितरण कर दिया गया।

श्रम का संविभाग

स्वामी भीखणजी के समय साधुओं के कार्य की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी। जिस कार्य पर जिसका ध्यान चला जाता, वही उसे कर लेता। कुछ कार्य ऐसे थे जिनको दीक्षा में सबसे छोटा साधु कर लेता। उस समय यह क्रम चल सकने वाला था, क्योंकि साधुओं को संख्या थोड़ी थी, किन्तु जयाचार्य के समय साधुओं की संख्या बढ़ चुकी थी। इसे देखते हुए उन्होंने यह व्यवस्था बना दी कि सामूहिक कार्य बारी-बारी से सभी को करने होंगे।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुख्यपत्र



तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>
समाचार प्रकाशन हेतु
abtyppt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री प्रतापमलजी (गंगाशहर) दीक्षा क्रमांक 472

मुनिश्री बड़े त्यागी बिरागी और तपस्वी थे। आपने तीन वर्ष तक एकान्तर तप, तीन वर्ष तक बेले-बेले तप किया। साधिक 10 वर्षीय संयम जीवन में तपस्या कर अच्छा आदर्श प्रस्तुत किया। तप की समग्र तालिका इस प्रकार है- उपवास/808, 2/324, 3/12, 4/10, 5/10, 6/2, 8/3, 16/1, 30/1 तप के कुल दिन 1664, जिनके 4 वर्ष 6 महिने 24 दिन होते हैं। मुनिश्री ने सं 1997 चाड़वास में लघु सिंह निष्क्रीडित तप की चौथी परिपाटी प्रारंभ की। वर्धमान परिणामों से ऊर्ध्व चढ़ते हुए प्रथम अठाई के तीसरे दिन दिवंगत हो गये।

- साभार : शासन समुद्र -

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क पंच दिवसीय मेगा एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायरनोस्टिक सेंटर एवं डे केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत युगप्रधान गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के संयम शताब्दी (100वे दीक्षा दिवस) के अवसर पर निःशुल्क पंच दिवसीय मेगा एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर उपचार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर से कुल 60 सदस्य लाभान्वित हुए।

कैम्प में पधारे डॉक्टर अमित कपूर (एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर थेरापिस्ट) एवं शीतलबोहरा (एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर थेरापिस्ट) का विशेष श्रम नियोजित हुआ।। आयोजन करने में एटीडीसी संयोजक राजेश देरासरिया, तेयुप अध्यक्ष जितेश दक इत्यादि का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

प्रेक्षाध्यान का जन जागृति अभियान

कांदिवली। प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान योग साधना केंद्र अशोकनगर कांदिवली द्वारा प्रेक्षाध्यान के जन जागृति अभियान का वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ के मार्गदर्शन में कांदिवली में रामनगर में प्रेक्षाध्यान का यह अवदान पहुंचे हर घर हर द्वार, करें जन-जन का कल्याण इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रेक्षाध्यान बने जन-जन का अभियान, सबको मिले स्वस्थता का अमुल्य उपहार, हर व्यक्ति का चहुमुखी हो विकास का आह्वान किया गया। साधक साधिकाओं के अलावा 50 भाई बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। दुगड़ ने अपनी चीर परिचित शैली में सवा घंटे का प्रशिक्षण दिया। जिसमें दीर्घ श्वांस प्रेक्षा समताल श्वांस प्रेक्षा, महाप्राण ध्वनि अनुलोम विलोम एवं प्रेक्षा चिकित्सा व मुद्रा के बारे में सुव्यवस्थित जानकारी प्रदान की।

स्कूली बच्चों को स्वेटर वितरण

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा राहत सेवा कार्य के तहत प्रातः 10:30 बजे राजकीय प्राथमिक विद्यालय आदिवासी बस्ती सापेटिया में बच्चों को स्वेटर वितरण किया गया। विद्यालय में कक्ष 1 से लेकर 5 तक के 35 बच्चे उपस्थित थे। सभी को साइज के हिसाब से स्वेटर दिया गया। इस अवसर पर अविलोक जी ढीलीवाल, विकास जी पगारिया, विनय जी नाहटा, विनीत जी फुलफगर और अशोक चोरड़िया उपस्थित थे।

तप संपूर्ति अनुष्ठान

गंगाशहर। पवन छाजेड़ के 11 की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि द्वारा परिवारिक जन की उपस्थिति में जैन संस्कारक 'युवक रत्न' राजेन्द्र सेठिया, देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने उत्साहवर्धक जैन मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। इस अवसर पर तेयुप के सहमंत्री कुलदीप छाजेड़ सहयोगी के रूप में जुड़े।

पृष्ठ 2 का शेष

युक्ति संगत बात को...

डॉ. महेन्द्र सिंह राठोड़, महेन्द्र पोरवाल, राजेश मरलेचा, संदीप मूथा, रूपा सुराणा, सरिका मरलेचा, अध्यक्ष गौतम जे. सेठिया, मंत्री संजय मरलेचा एवं मोक्षिता डागा ने अपनी भवाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, कंटालिया ने गीत का संगान किया। भुज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। बालक समर्थ गादिया ने 'ग्लोबल चेंजर' पुस्तक आचार्य श्री के चरणों में समर्पित की। आचार्य श्री ने बालक को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। स्काउट मास्टर चुन्नीलाल चौहान एवं सरपंच पारसमल ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म जयंती पर तप अभिनंदन समारोह

गंगाशहर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में आज भगवान पार्श्वनाथ जन्म जयंती के पावन अवसर पर उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि श्री कमल कुमार जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। मुनि श्री ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ ने चातुर्याम धर्म का प्रतिपादन किया, जिसका मूल आधार अहिंसा परमो धर्म है। उनके संदेश का मूल आधार सभी जीवों के प्रति दया, प्रेम और करुणा का भाव रखना है, तथा मन, वचन और कर्म से किसी को कष्ट न पहुंचाना है। भगवान पार्श्वनाथ का संदेश हमें शांति, संतोष और समन्वय की ओर ले जाता है। उनके सिद्धांतों का अनुपालन आज भी समाज में व्याप्त संघर्ष और हिंसा

को समाप्त करने में सक्षम है। मुनि श्री ने कहा कि आज का युग भौतिकवाद और तनाव से भरा है, ऐसे में भगवान पार्श्वनाथ का संदेश हमें शान्ति, संतोष और समन्वय की ओर ले जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि भगवान ने गृहस्थावास में सर्प-सर्पिणी का उद्धार किया और साधु बनने के बाद जन-जन का उद्धार किया।

तपस्या- शुद्धि और दुखों का क्षयतप अभिनंदन समारोह में मुनि श्री ने तपस्या के महत्व को समझाया तप का महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने भगवान महावीर स्वामी का उदाहरण देते हुए कहा कि इत्ये विसुद्धि मणों, तवों दुक्खक्षयों और अर्थात् तपस्या आत्मा की शुद्धि का मार्ग है और दुखों का क्षय करने वाली है। तपस्वियों का अभिनंदन मंत्री जतनलाल संचेती ने बताया कि इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री जतन लाल संचेती ने किया। इस अवसर पर महासभा संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष अमर चंद सोनी, महिला मंडल, तेयुप, टी पी फ की उपस्थिति रही।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

बैंगलुरु।

तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षा वाहिनी गांधीनगर बैंगलुरु द्वारा आदर्श कॉलेज चामराजपेट बैंगलुरु में 9.30 से 11.30 तक विशेष कार्यशाला का आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणी के सुरीश्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के सानिध्य में किया गया। डॉ मुनि पुलकितकुमारजी ने उद्घोषन में फरमाया प्रेक्षाध्यान भीतर की प्रसन्नता और आनंद को बढ़ाता है।

मुनि श्री ने विश्व ध्यान दिवस के उपलक्ष में आयोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा ध्यान के द्वारा निर्मलता और पवित्रता को बढ़ाने का प्रयास करें। धर्म दर्शनों का प्राण ध्यान को कहा गया है।

मुनि आदित्य कुमारजी ने ध्यान को अपने जीवन में इम्लीमेंट करने की प्रेरणा दी। प्रेक्षा वाहिनी और प्रेक्षा केंद्र की अपेक्षा आवाही और प्रेक्षा केंद्र बवीता चोपड़ा ने किया।

कोऑर्डिनेटर, प्रेक्षा इंटरनेशनल ट्रेनर रेणु कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़ ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक प्रेक्षा प्रशिक्षक बजरंग जैन ने कहा प्रेक्षा विज्ञान की उपस्थिति आहार संयम जीवन में आज तो व्यवहार परिवर्तन हो सकता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्रीमती बबीता चोपड़ा ने किया।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का अनुपम आयोजन

उत्तर चेन्नई।

आचार्य भिक्षु के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत उत्तर चेन्नई, चेन्नई सभा द्वारा मुख्य प्रवक्ता उपासक महेन्द्र दक की गरिमामय उपस्थिति में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगल शुभारंभ मंगलाचरण से तंडियारपेट की बहनों द्वारा किया गया। तत्पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा के संगठन मंत्री सुनील सकलेचा ने किया। उत्तर चेन्नई सभा के अध्यक्ष श्री इंद्रचंद जी डंगरवाल ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते

हुए अपने विचारों की अधिव्यक्ति में कहा कि यह कार्यशाला सभी के लिए ज्ञानवान एवं प्रेरणादायक साबित हो ऐसी आशा है प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंत्री देवीलाल हिरण ने कहा कि आचार्य भिक्षु के 300 वर्ष के उपलक्ष में आयोजित यह कार्यशाला सभी श्रावक श्राविकाओं के लिए बहुत ही उपयोगी है। आपने आचार्य भिक्षु द्वारा दिए गए सिद्धांतों की दैनिक जीवन में क्या उपयोगिता है-इस पर अनेक उदाहरण एवं अनेक सूत्रों द्वारा जानकारी दी गई। तेरापंथ और प्रतिमा पूजा, साध्य-साधन और साधना, पुण्य-पाप की परिभाषा, दान-दद्या के प्रकार आत्मा को पाप के आचरण से कैसे बचायें, स्वयं की यानि आत्मा की रक्षा स्वयं को स्वार्थी बनकर करना है।

व्यवहारिक पक्ष एवं आध्यात्मिक पक्ष दोनों पक्ष को अलग-अलग समझने का प्रशिक्षण दिया गया।



ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला 2025 का आयोजन

साउथ कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला - 2025 का सफल आयोजन साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा प्रो. डा. रत्ना कोठारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। दो दिवसीय कार्यशाला में बहनों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण एवं

प्रवचन क्रम में उपस्थित प्रशिक्षिका बहनों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा-जैन धर्म में जीवन विकास में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान संपदा है।

ज्ञान इहलोक व परलोक में साथ रह सकता है। ज्ञान का कभी अपहरण नहीं होता है। ज्ञान को तीसरा नेत्र कहा गया है। ज्ञान प्राप्त का स्थान ज्ञानशाला है। ज्ञानशाला दिव्यशाला है, संस्कार व चारित्रशाला है ज्ञानशाला न मन्त्र है न तंत्र है, न यंत्र है। इन तीनों से मुक्त होना ही ज्ञानशाला है। ज्ञानशाला सत्यम्, शिवम्, सुन्दरं का समन्वित रूप है। ज्ञानशाला में पढ़ाने वाला प्रशिक्षक

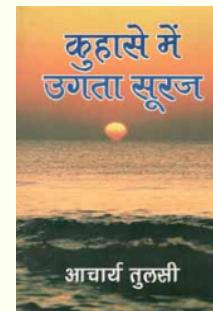
कहलाला है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यशाला में प्रशिक्षिका बहनों को मुनि जिनेश कुमारजी, राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा, प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा, डॉ रत्ना कोठारी, डा. प्रेमलता चोरडिया ने प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया, साउथ कलकत्ता सभा के अध्यक्ष बिनोद चोरडिया आंचलिक संयोजिका डॉ प्रेमलता चोरडिया आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

उद्घाटन सत्र का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

बोलती किताब

कुहासे में उगता सूरज



लगभग दो दशक पूर्व दक्षिण भारत की एक ऐतिहासिक यात्रा के दौरान संवाद की एक ऐसी धारा का सूत्रपात हुआ, जिसने समय, क्षेत्र और सीमाओं को जोड़ने का कार्य किया। सन् 1968 के मद्रास चारुमास से लेकर 1 जनवरी 1969 को साप्ताहिक विज्ञप्ति के प्रकाशन तक की यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं थी, बल्कि वैचारिक भी थी। इसका उद्देश्य था दक्षिण और उत्तर के बीच जीवंत संवाद स्थापित करना तथा केन्द्र के साथ पूरे धर्मसंघ को जोड़ना। सीमित साथनों और संसाधनों के बावजूद यह विज्ञप्ति निरंतर आगे बढ़ती रही और वर्षों में सैकड़ों अंकों के माध्यम से पाठकों का विश्वास अर्जित करती रही।

समय के साथ यह अनुभव हुआ कि केवल सूचना देना पर्याप्त नहीं है; पाठकों की चेतना को नए विकास के देना अधिक आवश्यक है। इसी विचार से विज्ञप्ति में 'दिशा-दर्शन' नामक एक स्थायी संस्था की शुरुआत हुई। आरंभ में इसे अल्पकालिक प्रयोग माना गया, किंतु पाठकों की गहरी रुचि और सहभागिता ने इसे एक सशक्त वैचारिक मंच में बदल दिया। समसामयिक विषयों पर केंद्रित इस संस्था ने पाठकों को विचार के लिए प्रेरित किया और संवाद को एक नई दिशा प्रदान की।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि धर्माचार्यों को समसामयिक विषयों से क्यों जुड़ा चाहिए। परंतु शाश्वत मूल्यों की रक्षा तभी सार्थक है, जब वे वर्तमान की समस्याओं से जुड़कर समाधान प्रस्तुत करें। धर्मक्रांति के सूत्र—विशेषकर समाधान-प्रक्रता और वर्तमान-प्रधानता—इस बात को रेखांकित करते हैं कि धर्म केवल परलोक का आशासन नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन की चुनौतियों का उत्तर भी है। इसी दृष्टि से विज्ञप्ति में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए।

तेरापंथ धर्मसंघ की विशेषता रही है कि वह परंपरा में आस्था रखते हुए भी नवीनता से संवाद करता है। शाश्वत सत्य को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करने की यह कला उसकी पहचान है। अद्यात्म और व्यवहार के बीच संतुलन स्थापित करने का यह प्रयास ही 'दिशा-दर्शन' श्रृंखला का मूल उद्देश्य है। यह श्रृंखला केवल लेखों का संकलन नहीं, बल्कि समाज को दिशा, चेतना और गतिशीलता प्रदान करने का एक सतत प्रयास है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें:
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का विधिवत शुभारंभ

गंगाशहर।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC) गंगाशहर का नए स्थान पर स्थानानंतरण शुभारंभ जैन संस्कार विधि के अनुसार गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर 'जैन संस्कारक' युवक रत्न राजेंद्र सेठिया के सान्निध्य में पवन छाजेड़, पीयूष लूणिया, भरत गोलछा, विपिन बोथरा एवं देवेंद्र डागा द्वारा विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न कराया गया। तेरापंथ युवक परिषद

(तेयुप) गंगाशहर के मंत्री मांगीलाल बोथरा ने जानकारी देते हुए बताया कि

इस शुभ अवसर पर भामाशाह हड्डमान मल रांका, सभा के पूर्व अध्यक्ष अमरचंद सोनी, सभा मंत्री जतन संचेती, एटीडीसी के राष्ट्रीय प्रभारी पीयूष लूणिया, अभातेयुप साथी विजेंद्र छाजेड़, सहित तेयुप टीम के अनेक साथियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया।

कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर के अध्यक्ष ललित राखेचा ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 1 का शेष

लोकार्पण किया गया। पूर्व न्यायाधिपति मनोज गर्ग ने अपनी पुस्तक आचार्य श्री के समक्ष लोकार्पण की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

संतोष और असंतोष का...

एक संस्कृत कवि ने कहा है कि तीन बातें—स्वदार, भोजन और धन में संतोष रखना चाहिए तथा तीन बातें—अध्ययन, जप और दान में संतोष नहीं रखना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने कहा कि कुछ वर्षों के बाद कंटालिया के पश्चात् मुसालिया आना हुआ है। यहाँ के लोगों में अच्छी धार्मिक भावना बनी रहे। आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त साधीप्रमुख श्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्घोषन में

कहा कि जिनवाणी सबसे शीतल होती है। जिनवाणी की व्याख्या करने वाले गुरु होते हैं। गुरु की वाणी शिष्य के भीतर शीतलता प्रदान करने वाली होती है। आज परम पूज्य गुरुदेव का यहाँ आगमन हुआ है, जिससे सभी को शांति और शीतलता का अनुभव हो रहा है।

अपनी संसार पक्षीय जन्मभूमि में साधी सिद्धार्थप्रभा जी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। रमेशचंद बोहरा, उषा बोहरा, अशोक बोहरा, महावीर पिपाड़ा, दर्शन बोहरा, संगीत बोहरा एवं जोधाराम जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

महाचरण का नवम दिवस : आचार्य भिक्षु की ज्ञान संपदा

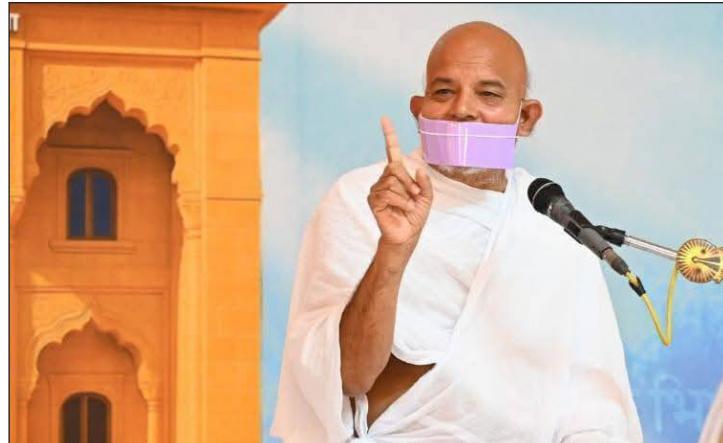
बुद्धि और बाहुश्रुत्य के साथ प्रतिपादन की कला का है महत्व : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

23 दिसंबर, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'भिक्षु चेतना वर्ष' के महाचरण के नवम दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल महांत्रोच्चार से हुआ। साध्वी वैभवप्रभा जी ने गीत का संगान किया। निर्धारित विषय "आचार्य भिक्षु की ज्ञान संपदा" पर साध्वी श्रुतयशा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

तदुपरान्त पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि मोक्षमार्ग चार अंगों वाला है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए धर्म की साधना आवश्यक है। मोक्षमार्ग के अंगों में एक अंग ज्ञान है। धर्म की साधना में ज्ञान भी सहयोगी बनता है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक्



चारित्र और तप होने पर मोक्ष प्राप्ति की दिशा में गति हो सकती है।

मोक्ष मार्ग के अंग ज्ञान की आराधना स्वाध्याय के माध्यम से हो सकती है। ज्ञानाराधना से मार्गदर्शन की प्राप्ति होती है और कर्म निर्जरा भी हो सकती है। व्यक्ति का श्रुतधर होना एक विशेष बात होती है। ज्ञान के संदर्भ में तीन बातें हैं—बुद्धि, ज्ञान और प्रस्तुति की कला। इनमें प्रथम स्थान बुद्धि का है,

उसके बाद ज्ञान का, और यदि ज्ञान भी अधिक न हो तो प्रतिपादन की कला का महत्व होता है। ज्ञान के विकास के लिए प्रतिभा, प्रज्ञा और बुद्धि आवश्यक हैं। इनके अभाव में अधिक परिश्रम करने पर भी ज्ञान का विकास अधिक नहीं होता। यदि व्यक्ति की बुद्धि तीक्ष्ण हो तो वह अज्ञान को दूर कर बाहुश्रुत्य को प्राप्त करने में सहायक बन सकती है। इसके साथ प्रतिभा और बुद्धि का सम्यक

उपयोग अर्थात् पुरुषार्थी भी आवश्यक है, तभी ज्ञान का विकास संभव हो पाता है। बुद्धि और ज्ञान के पश्चात् प्रतिपादन की योग्यता व कला—ये तीनों जहाँ होती हैं, वहाँ व्यक्ति अत्यंत योग्य बन सकता है।

परम वंदनीय, परम श्रद्धेय आचार्य श्री भिक्षु को देखकर प्रतीत होता है कि उनमें बुद्धि, बाहुश्रुत्य और प्रतिपादन की कला—ये तीनों गुण विद्यमान थे। आचार्य भिक्षु की ज्ञान संपदा विलक्षण थी। उनका बाहुश्रुत्य अत्यंत विशाल था। 'भिक्षु दृष्ट्यान्त' ग्रंथ को देखें तो उनकी प्रतिपादन कला स्पष्ट दिखाई देती है। आचार्य भिक्षु में दूसरों को समझाने और बताने की अद्भुत कला थी। उन्होंने आगमों का कितना गहन अध्ययन किया होगा। आचार्य श्री भिक्षु की ज्ञान संपदा अत्यंत उत्कृष्ट थी। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण अंग उनकी ज्ञान संपदा है। उनके द्वारा रचित अनेक ग्रंथ भी उनकी

ज्ञान संपदा के परिचायक हैं।

इन दिनों गुरुदर्शन करने वाली साध्वियों ने आचार्य प्रवर की आज्ञा से उपस्थित संत समाज को सविधि वंदन कर खमत खामणा की। मुनि दिनेश कुमार जी ने संत समाज की ओर से खमत खामणा की। अभिनव सेठिया ने आचार्यश्री से तेरह की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कंटलिया की बेटियों ने गीत का संगान किया।

आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में एस. हायर सेकेंडरी स्कूल, हरियामाली के विद्यार्थी भी उपस्थित थे। विद्यालय के निदेशक गजेन्द्र सिंह ने अपनी अभिव्यक्ति दी। छात्रा निकिता बंजारा ने अपनी प्रस्तुति दी। आचार्यश्री ने बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान किया और उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की। आचार्य प्रवर के आह्वान पर उपस्थित विद्यार्थियों ने सद्भावना, नैतिकता एवं नशा-मुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

महाचरण का दशम दिवस : आचार्य भिक्षु की आचार निष्ठा

साधु के लिए बहुत बड़ा धन है आचार : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

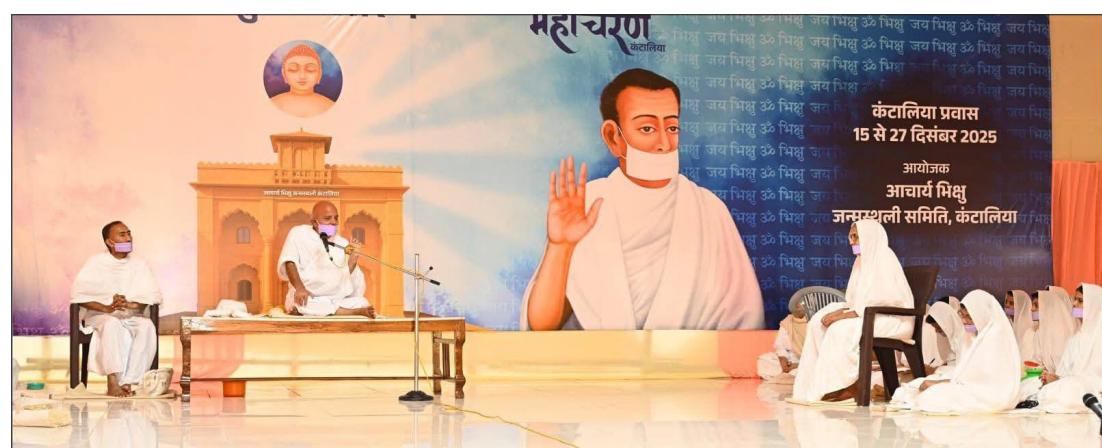
24 दिसंबर, 2025

महामना आचार्य श्री भिक्षु की पावन जन्मभूमि में आचार्य श्री भिक्षु के परंपर पद्धति, ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम वाणी में तीन बातें हैं—अहिंसा, संयम और तप। इन तीनों को हम आचार के संदर्भ में भी देख सकते हैं और इनका विश्लेषण भी कर सकते हैं। अहिंसा भी आचार का अंग है, संयम भी आचार है और तप भी आचार से जुड़ा हुआ है। अहिंसा, संयम और तप

आचार हैं, साथ ही ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार—इन पंचाचारों का समावेश होता है।

आज का निर्धारित विषय है—'आचार्य भिक्षु की चारित्र निष्ठा'। साधु के लिए आचार एक बहुत बड़ा धन होता है। आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण का आधारभूत तत्त्व भी आचार पक्ष ही रहा है। वे आचार के प्रबल पक्षधर थे। इसके साथ ही उनमें जो ज्ञानवत्ता और प्रबुद्धता थी, उससे उनका आचार और अधिक निखर कर सामने आया। उनके समय में यदि साध्वियों के पास थोड़ा कपड़ा अधिक निकल जाता, तो आहार-पानी का संबंध तोड़ लेना—आचार के संदर्भ में लिया गया एक कठोर निर्णय था।

आचार का पक्ष ऐसा है कि कठिनाइयों की स्थिति में भी आचार की शुद्धता का प्रयास होना चाहिए। जहाँ समुदाय होता है, वहाँ सबका विवेक एक समान हो—यह संभव नहीं होता। किसी से आचार में प्रमाद हो जाए तो उसे उचित समय पर ध्यान दिलाने का प्रयास होना चाहिए। यदि आचार में भी कोई प्रमाद दिखाई



दे, तो विनम्रता के साथ उनसे भी उचित निवेदन किया जा सकता है। आचार्य भिक्षु की आचार निष्ठा तो हम सभी के लिए अनुकरणीय है। हमें अपने आचार के प्रति छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना चाहिए, जिससे आचार और अधिक निखर कर सामने आया। उनके समय

में यदि साध्वियों के पास थोड़ा कपड़ा अधिक निकल जाता, तो हम सभी के लिए अनुकरणीय है। हमें अपने आचार के प्रति छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना चाहिए, जिससे आचार और अधिक निखर कर सामने आया। हम सभी में भी आचार्य श्री भिक्षु की भाँति आचार संपदा पुष्ट होती रहे और

हम पंचाचार में प्रगतिमान रहें—यह काम्य है। आज गुरुदर्शन करने वाली साध्वियों ने संत वृंद से खमत खामणा की। संतों की ओर से मुनि कुमारश्रमण जी ने मंगलकामना व्यक्त की। साध्वी उर्मिलाकुमारी जी ने गुरुदर्शन कर गीत का संगान किया।

साध्वियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। परम पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में आज महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय के छात्र उपस्थित हुए। आचार्य प्रवर की अनुज्ञा से मुख्य मुनि प्रवर ने छात्रों को प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात् आचार्य प्रवर ने भी विद्यार्थियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्भावना, नैतिकता एवं नशा-मुक्ति का संकल्प स्वीकार कराया।

आचार्य प्रवर की अनुज्ञा से मुख्य मुनि प्रवर ने छात्रों को प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात् आचार्य प्रवर ने भी विद्यार्थियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्भावना, नैतिकता एवं नशा-मुक्ति का संकल्प स्वीकार कराया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

संघ से पृथक् होने वालों के प्रति-3

आचार्य भिक्षु ने संघ से पृथक् होने वालों के लिए एक आचार-संहिता दी, जिससे कि वे पृथक् होने के क्षण में तथा पृथक् होने के बाद शिष्टाका पालन करें और राग-द्वेष को न बढ़ाएं।

उन्होंने लिखा— किसी के द्वारा साधुत्व का पालन शक्य न हो, किसी से स्वभाव न मिल पाए अथवा धीठ एवं कषाययुक्त जान कर कोई साधु उसे साथ में न रखे, चातुर्मासिक प्रवास या विहार का क्षेत्र अच्छा न मिलने पर अथवा वस्त्रादि के कारण अथवा अयोग्य जानकर साधुओं द्वारा स्वयं को गण से पृथक् करने की बात जान लेने पर इत्यादिक अनेक कारणों से कोई गण से पृथक् हो जाए तो गण के साधु-साध्वियों के अवगुण बोलने का त्याग है, विद्यमान या अविद्यमान दोष फैलाने का त्याग है। छिपे-छिपे लोगों को शंकित और भ्रमित कर संघ के प्रति उनकी आस्था को कम करने का त्याग है।



जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

अनर्थदण्ड विरमण

यह 'अनर्थदण्ड' व्रत बहुत ज्यादा उपयोगी है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन के लिए यह व्रत संरक्षक का कार्य करता है। व्यक्ति पाप धोने के लिए ना जाने कितना प्रयत्न करता है किंतु पापकारी प्रवृत्ति छोड़ने का साहस कोई विरले ही कर पाते हैं। पूरा छोड़ने का क्षयोपशम अथवा साहस न हो तो उसे कम तो कर ही सकता है। अनर्थदण्ड का अर्थ ही यही है कि 'बिना प्रयोजन पापकारी करना' और इसका संयम करना ही 'अनर्थदण्ड विरमण' है। इसके कई प्रकार हैं:—

1. अपच्चानाचरित—अर्थात् आर्तविचारों में, नकारात्मक विचारों में रहना।
2. प्रमादचरित—प्रामाद मय आचरण में रहना।
3. हिंसप्रदान—हिंसा के भावों में प्रधानता होना।
4. पापकर्मोपदेश—पापकारी प्रवृत्ति का उपदेश देना, प्रोत्साहन करना।

इसके अलावा भी असावधानी, मनोरंजन, आलस्य आदि भी अनर्थदण्ड होने के कारण बन सकते हैं। श्रावक के लिए तो निर्देश है ही किंतु यदि हर आदमी इस विषय में ध्यान रखे तो शांति स्थापित हो सकती है। जैसे इसके कुछ नियम हैं— जुआ-सद्गुण नहीं खेलना, पापकारी-हिंसा का उपदेश नहीं देना, आर्त-ध्यान नहीं करना, किसी को हिंसक सामग्री नहीं देना मृत्युभोज नहीं करना, अनावश्यक बिजली-पानी का उपयोग नहीं करना।



भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

साधु के बीमारी क्यों?

किसी ने पूछा— महाराज! साधुओं के बीमारी क्यों होती है?

स्वामीजी बोले— किसी आदमी ने पत्थर को आकाश की ओर उछाला, सिर उसके नीचे कर दिया, भविष्य में पत्थर उछालने का परित्याग किया, किन्तु पहले जो पत्थर उछाला है उसकी चोट तो लगेगी ही। फिर पत्थर नहीं उछालेगा तो चोट नहीं लगेगी। ऐसे ही पाप-कर्म का बन्धन किया उसको तो भुगतना ही पड़ेगा, पीछे पाप का त्याग कर लिया तो उसे दुःख नहीं भुगतना पड़ेगा।



क्या आप जानते हैं?



जिस घर में सन्तान का जन्म हुआ हो, वहां तीन दिन तक गोचरी न कराएं। हॉस्पिटल में जन्मा बच्चा हॉस्पिटल से घर आ जाए तो जिस दिन जन्मा हो उस दिन से तीन दिन तक गोचरी न कराएं। इसी प्रकार मृत्यु के दिन से तीन दिन तक मृतक (तथा उसके पुत्रों के) के घर में गोचरी न कराई जाए, दिनों की गिनती तिथि के अनुसार की जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

बंगाली मिठाई का त्याग करें।

महाचरण का ग्यारहवां दिवस : आचार्य भिक्षु की शरीर सम्पदा

सुंदरता से अधिक शरीर की निरामयता का है महत्व : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया ।

25 दिसंबर, 2025

‘भिक्षु चेतना वर्ष’ के महाचरण के ग्यारहवें दिवस का शुभारंभ युगप्रथान आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। समणी वृद्ध ने गीत की प्रस्तुति दी। “आचार्य भिक्षु की शरीर संपदा” विषय पर साध्वी सुमित्रप्रभा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिषास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि धर्म एक महान तत्त्व है, उसकी साधना-आराधना में शरीर का भी योग अपेक्षित हो सकता है। एक सूक्त में कहा गया है कि शरीर धर्म का साधन है। धर्म की साधना में सूक्ष्म शरीर, कार्मण शरीर और स्थूल शरीर—तीनों का योगदान होता है। स्थूल शरीर की अनुकूलता होने पर कई घंटों तक स्वाध्याय किया जा सकता है, खड़े-खड़े ध्यान किया जा सकता है। शरीर की अनुकूलता न होने पर घंटों-घंटों बैठकर अथवा खड़े होकर स्वाध्याय या ध्यान करना संभव नहीं हो पाता। शरीर अनुकूल हो तो लंबे विहार भी हो सकते हैं, अवस्था अनुकूल न हो तो लंबा विहार करना भी मुश्किल हो जाता है।

A man with a shaved head, wearing a white robe and a pink surgical mask, is seated cross-legged on a stage. He is gesturing with his right hand while speaking into a microphone mounted on a stand. The background is a large, warm-toned orange backdrop depicting a building with a tiled roof and some text in Devanagari script. The stage floor has a yellow floral garland.

आचार्य श्री तुलसी कोलकाता पधारे और वहाँ से चातुर्मास सम्पन्न कर एक ही शेषकाल में राजनगर, केलवा पधार गए। एक शेषकाल में उनकी संभवतः यह सबसे लंबी यात्रा रही। सेवा करनी है तो भी शरीर की अनुकूलता होनी चाहिए। गोचरी करना, व्याख्यान देना, लोगों को आध्यात्मिक सेवा देना—इन सबके लिए शरीर का आनुकूल्य आवश्यक होता है। शरीर संपदा का उपयोग अच्छे कार्यों में भी किया जा सकता है और बुरे कार्यों में भी, अथवा यह भी हो सकता है कि कोई इम्प्रेस उपयोग द्वी न करे।

शरीर संपदा किसे मानें—यह देखने के

चार कोण हो सकते हैं। पहला है सौंदर्य। शरीर संपदा का दूसरा कोण है शारीरिक स्वस्थता—निरामयता। तीसरा है शरीर की बलवत्ता, चौथा है इंद्रिय सक्षमता। शरीर की सुंदरता भी आवश्यक होती है, यद्यपि शरीर की सुंदरता का इतना अधिक महत्त्व नहीं है। शरीर की सुंदरता में शुभ नाम कर्म का उदय योगभूत बनता है। सुंदरता की तुलना में शरीर की स्वस्थता, शरीर की बलवत्ता और इंद्रिय सक्षमता का बहुत अधिक महत्त्व है। आचार्यों की आठ गणि संपदाओं में एक शरीर संपदा भी होती है। आचार्य की सुंदरता का थोड़ा मूल्य हो सकता है, परंतु सुंदरता से अधिक शरीर

की निरामयता का बहुत अधिक महत्व है। शरीर की निरामयता रहेगी तो आचार्य के कार्य करने में अनकूलता रह सकेगी।

आज का विषय है—“आचार्य भिक्षु की शरीर संपदा।” उनका शरीर सुंदर, निरामय तथा इंद्रिय सक्षमता से युक्त था। उनके शरीर में शक्ति भी रही और शरीर निरामय भी रहा। शरीर को अनुकूल बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। खानपान, ध्यान, प्राणायाम, व्यायाम आदि पर ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य भिक्षु ने अपनी शरीर संपदा का कितना उपयोग किया होगा—आज उनकी जन्मस्थली में उनके शरीर की सक्षमता की चर्चा हो रही प्रीति डागा ने गीत का संगान किया। प्रेरणा गादिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। प्रमोद भंसाली ने अपनी प्रस्तुति दी। पाली एवं आसींद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अलग-अलग प्रस्तुतियाँ दीं। पाली के डॉ. भीमराज भाटी ने आचार्य प्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। तेरापंथ महिला मंडल, कंटालिया ने पूज्य प्रवर के चरणों में तेरह संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

